

ज़िंदा 'मैं' करता, मरा संगीत पैदा करता

कबीर ने कहा है कि, देखा था एक बकरा जो मैं-मैं-मैं किए जा रहा था, फिर वह बकरा मर गया। उसकी चमड़ी से किसी ने तानपुरे के तार बना लिए। मैं उस रास्ते से गुजर रहा था, मैंने उस तानपुरे पर ऐसा संगीत सुना जैसा मैंने कभी ना सुना। मैंने उस आदमी को रोका और पूछा कि कहां से पाया तुमने ये तानपुरा? उसने कहा, देखा नहीं, एक बकरा था यहां, जो मैं-मैं-मैं किए जा रहा था। यह वही है। वह मर गया मैं-मैं करने वाला। अब वह तानपुरे का तार हो गया है। अब बड़ा संगीत पैदा हो रहा है।

लेकिन जब तक मैं-मैं पैदा होता था, तब तक वह संगीत पैदा नहीं होता था। वह मैं-मैं भीतर हम भी कहे जा रहे हैं, इसलिए हम वीणा नहीं बन पाते कि उसमें परमात्मा का संगीत पैदा हो जाए। लेकिन ये हो सकता है।

कबीर खूब हंसने लगे, यह तो खूब रही! ज़िंदा बकरा संगीत न गा सका; सिर्फ मैं-मैं करता रहा, और मरा बकरा संगीत पैदा कर रहा है!

कबीर ने लौटकर साधियों से कहा, क्या अच्छा न हो कि हम भी मर जाएं! छोड़ दें मैं-मैं और मर जाएं! अभी मैं देखकर आ रहा हूँ चमत्कार! एक ज़िंदा बकरा कभी गीत गा न सका, मर कर गीत गा रहा है। तो हम भी मर जाएं ना!

वही मैं कह रहा हूँ कि मिट जाएं! तो फिर रह जाए सिर्फ संगीत। हमारे मिटते ही वही रह जाता है।

महर्षि पतंजलि योग में आठ बातें आती हैं। हरेक बहुत अमूल्य हैं, लेकिन आठवीं बात है 'समाधि'। समाधि उसकी



- डॉ. कु. गंगाधर

लोकतंत्र के चार स्तंभों में से एक स्तंभ ने आखिर एक कदम आगे बढ़ा ही दिया, जिन्होंने आध्यात्मिकता के प्रथम और अंतिम स्तंभों राजयोग का एक साथ प्रशिक्षण लिया हो, जो अपने आप में एक इतिहास है और इसका साक्षी है 'छत्तीसगढ़ विधानसभा'।

ज़रूरी है। क्या करें इस समाधि को लाने के लिए? बहुत कुछ नहीं किया जा सकता, इतना ही कर सकते हैं कि अपने को रिसेप्टिव बना लें, ग्राहक बना लें, अपने को और बाह्य बातों व प्रभावों से हल्का कर दें और आता है तो सत्य आ जाए, और परमात्मा अगर आता है तो आ जाए, इतना ही करें।

एक बार एक आदमी रात को झोपड़ी में बैठकर छोटे दीये को जलाकर कोई शास्त्र पढ़ रहा था, आधी रात बीत गई, वह थक गया और फूंक मारकर दीया बुझा दिया। वो हैरान हो गया! जब तक दीया जल रहा था, पूर्णिमा का चाँद बाहर ही खड़ा रहा, भीतर न आया। जब दीया बुझ गया, उसकी धीमी सी टिमटिमाती लौ खो गई, तो चाँद की किरणों भीतर भर आई। द्वार-द्वार, खिड़की-खिड़की, चाँद भीतर नाचने लगा। वह आदमी बहुत हैरान हो गया! उसने कहा कि एक छोटा सा दीप इतने बड़े चाँद को बाहर रोके रहा!

हमने भी बहुत छोटे-छोटे दीये जलाए हैं अपने अहंकार के, 'मैं' के, उसकी वजह से परमात्मा का चाँद बाहर ही खड़ा रह जाता है। समाधि का अर्थ है : फूँको और बुझा दो इस दीये को, हो जाने दो अंधेरा। तत्काल चारों तरफ से आ जाता चाँद, वो जिसे हमारे इस छोटे से अहंकार के 'मैं' ने रोक रखा था।

आज मनुष्य अनेक मैं-मैं के बंधन, अहंकार, अंधकार से ग्रस्त हो गया है। यह सब अज्ञान अंधकार व अहंकार हमें परमात्मा के समीप जाने नहीं देगा। इस दीये को बुझा देना है।

दूसरा, अकेला होना, यानि जो हम वास्तविक हैं, सत्य हैं, उसके भीतर जाना है, खोजना है, याद करना है। देखना है और उस आनंद में अभिभूत होना है।

तो आइये इस पुरुषोत्तम मास में पुरुषार्थ करें कि हमारे अंदर जितने भी प्रकार के मैं-मैं के दीये जल रहे हैं, जो परमात्मा के प्रकाश की किरणों को रोक रहे हैं, उन्हें बुझायें।

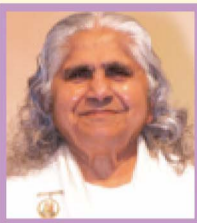
इसलिए समाधि की तीन बातें हैं - अंधकार, अकेला होना और मिट जाना। बुझ जाए दीया, प्रकाश परमात्मा का तत्काल मिल जायेगा।

बुद्धि की लायकियत से बनती है, निर्विघ्न स्थिति

मीठा बाबा सभी को कितना खुश करता है। कितनी अच्छी विधि बताई है कि खुशी बांटने से बढ़ती है, कभी कम नहीं होती। खुश रहने के लिए बाबा ने इतनी बधाइयाँ दीं, मुबारकें दीं। अगली सीज़न के लिए बाबा ने जो रिटर्न मांगा है, निर्विघ्न स्थिति, यह प्रॉमिस करना है। पहले निर्विघ्न स्थिति ऐसी रहे, एक हैं विघ्न डालने वाले, दूसरे हैं विघ्नों से घबराने वाले और तीसरे हैं विघ्नों को खत्म करने वाले। मैं कौन हूँ, हर एक सोचे, अपने आपको देखे। निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवा में 12 वैल्यूज 8 शक्तियाँ, कितना काम करती हैं। बाबा ने कहा, समय खज़ाना है। समय है खुश रहने का, खुशी बांटने का। तो सदा खुश कैसे रहें? क्वेश्चन नहीं है पर अंदर से अडोल अचल स्थिति बनाने के लिए 'मैं' 'मेरा' से मुक्त रहें। मैं का अभिमान है, मेरा में अटैचमेंट है। दिल से देखो इन दोनों से फ्री हैं? जब बाबा ने कहा प्रॉमिस करो तो आप लोगों ने ज़रूर सोचा होगा। प्रॉमिस करना, प्रतिज्ञा को पालन करना उसके लिए मैं अनुभव से राय देती हूँ, वैल्यूज जीवन में धारण करो। सत्यता, नम्रता, धैर्यता और गम्भीरता से मधुरता ऑटोमेटिकली आती

होना चाहिए, यह शब्द जो हैं ना, सारी खुशी खत्म कर देता है। कोई कहे मुझे 20 साल का अनुभव है, क्या अनुभव है? क्या दूसरे के अवगुण देखने का अनुभव है या अपने अवगुण निकालने का अनुभव है? माया ने हमको अपना बनाकर देह अभिमानी बना दिया। अब ऐसी माया को जीतने के लिए ईगोलेस, वाईसलेस बनना है। सच्चाई और नम्रता के आगे ईगो बिचारे का वश नहीं चल सकता। अगर कोई भी बात आयेगी तो शुभ भावना शुभ कामना रखने से, ऐसा व्यवहार करने से चली जायेगी। जहां मोहब्बत है वहां मेहनत नहीं, जहां मेहनत है वहां मोहब्बत नहीं। कितना बाबा ने सहज कर दिया है। वाह बाबा वाह! बाबा आपने हमारी बुद्धि का ताला तो खोला, अभी बुद्धि को इतना काम लायक बनाया, मैं-पन वाली बुद्धि से काम नहीं लेना है। बाबा ने अपना काम कराने के लिए बुद्धि को लायक बनाया है। काम बाबा का है, मेरा नहीं है। हम क्या कर सकते हैं! कदम-कदम पर यहां देखो, सबको खुशी क्यों होती है? दुनिया में मनुष्य शान्ति ढूँढ़ते हैं, यहां शान्ति के पहले खुशी बहुत है। खुशी में शान्ति है, शान्ति में प्रेम है। शान्ति, खुशी, प्रेम। वायुमण्डल

गये। मैं तो आँखों से आँसू बहाते गीता भागवत पढ़ते कहती थी मुझे अर्जुन क्यों नहीं बनाया! मुझे गोप-



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

गोपी क्यों नहीं बनाया! भगवान को उलहना देती थी। अभी भगवान ने अर्जुन सम भावना वाला बना दिया, भगवानुवाच सुन रहे हैं, कांध हिला रहे हैं। अर्जुन सदा कांध हिलाता है। दिल को बात लगती है। बाबा जब मुरली चलाता है तो कबूतर की तरह हूँ, हूँ... करते हैं! कबूतर का गायन बहुत है। भक्ति में कबूतर को बहुत खिलाते हैं। कबूतर अकेला कभी नहीं खायेगा, सभी मिलकर खाते हैं। एक हूँ, हूँ करता, दूसरा, कबूतर कहां अकेला नहीं बैठता। उसकी यूनिटी बहुत है। तो खुशी है यूनिटी में। एक ने कही दूसरे ने मानी, शिवबाबा कहे दोनों हैं ज्ञानी। ऐसे नहीं बोलो यह ठीक नहीं करता, मेरा अनुभव यह कहता... अरे शान्त करो ना।

अभी आज जो बाबा के बच्चे काम करते हैं, हम थोड़े ही कर सकते हैं। भगवान को जो कराना था वह कराया, अभी शान्त रहना सिखाया है। जो बाबा ने किया कराया, करनकरावनहार बाबा कैसे है, यह भी अनुभव खुशी बढ़ाता है। ऐसे साक्षी होकर देखो, हर एक कैसे शान्ति से अपना काम कर रहे हैं।

जो भगवान शान्ति में नहीं दख आर मा माज म रह, माज म कान समझा था भगवान कहगा। क वाह बच्चे रहता है? जो कभी मूँझता नहीं है। बात वाह! हम भक्तों को भगवान मिला है, वह कोई भी आये, ऐसे नहीं होना चाहिए, ऐसे कहता है वाह बच्चे वाह! भक्त बच्चे बन



दादी हृदयमोहिनी अति मुख्य प्रशासिका

हंसमुख बन सबके मुख पर लाओ हँसी

हम सभी की खु-राक भिन्न-भिन्न तो है ही, शरीर के लिए भी है लेकिन आत्मा के लिए कौनसी खुराक है? खुशी। खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। और जो खुश रहता है उसको देख मैजोरिटी सभी खुश रहते हैं। कोई कोई होता है जो खुश करने की कोशिश करते हैं तो भी नहीं होते हैं। वो अपने आपको चेक करें तो मेरे में क्या कमी है? जो लोग चाहते भी हैं, लेकिन खुश नहीं रह पाते। इसका कारण क्या है? कोई बड़ी बात भी नहीं होती है। गहराई से अगर सोचें तो ऐसी कोई बड़ी बात नज़र नहीं आती फिर भी खुशी कम हो जाती है, कोई तो कमी होगी जो नैचुरल खुशी कम हो जाती है! भले दिनचर्या में टाइम फिक्स करते हैं, उस अनुसार बैठते भी हैं और चाहते भी हैं कि हमारी खुशी हमारे पास आये लेकिन नहीं आती है तो इसका कारण क्या हो सकता है? खुशी तो हमारा खज़ाना है। बाबा ने हमको दिया क्या? नई बात तो खुशी की है ना! पुरानी बातें तो बहुत हैं लेकिन सदा खुश रहें, अब मैं तो रहूँ लेकिन मेरे द्वारा दूसरों को भी खुशी की फीलिंग आवे। होना तो ऐसा चाहिए ना!

तो हम सदा खुश रहें, बात तो हुई बात से, बातें तो आती हैं क्योंकि संगठन है ना। संस्कार, संस्कार से मिलें, उसके लिए सामना तो करना नहीं है। किसके भी स्वभाव या पुरुषार्थहीनता में बातें तो हैं लेकिन उन बातों में मैं कहाँ तक हूँ? क्योंकि अगर बातों को बैठ करेक्शन करेंगे तो भी नहीं हो सकता है, वो तो जाल में फंस जायेंगे। लेकिन खुश रहें क्योंकि भाषण करते हैं या मुरली में भी रोज़ आता है, तो आप ब्राह्मण कैसे होने चाहिए। मुरली में ही विशेष बाबा का अटेन्शन होता है कि ब्राह्मण लाइफ में मुख्य क्या होना चाहिए? जो हम भी हंसमुख (खुश) रहें और दूसरे भी हमको देख करके हंसमुख रहें तभी तो सन्तुष्ट होंगे। अगर कोई दूसरा सन्तुष्ट नहीं फिर भी मैं समझूँ बहुत होशियार हूँ, यह तो राँग है। अगर मैं समझती हूँ मैं होशियार हूँ, ठीक है, अच्छा है। होते भी हैं होशियार, लेकिन किस बात में होशियार हैं, यह चेक करना ज़रूरी है। कई तो बातों में होशियार बहुत होते हैं, अपने आपको कोई भी बात में फेल होने नहीं देंगे, ऐसे भी कई होते हैं। लेकिन चेक करना है हमारे अंदर में खुशी कितनी है, यहां आये तो खुशी के लिए हैं। और बातें तो दुनिया में भी चलती हैं, खाना-पीना रहना यह तो

चलता ही है। हमें बाबा तो कहते कर्मयोगी, बाबा सिर्फ यह नहीं कहते कर्म करते योग में रहो लेकिन लाइफ ही हमारी योगी लाइफ हो। चलते-फिरते बाबा की याद हमारे से नहीं छूटे, और बाबा शब्द भी सामने आया ना तो खुशी ज़रूर आयेगी। तो हमको खुश भी रहना है और खुश करना भी है। सिर्फ रहना तो ठीक है, लेकिन फिर तो कहेंगे यह इन्डीपेंडेंट अपने डिपार्टमेंट में रहता है। संगठन में रहना भी है और कायदेमुजिब रहना है। ऐसे नहीं मैं खुश रह रहा हूँ ना, लेकिन कायदा है या नहीं है, यह भी सोचना है। अभी मधुबन इतना बड़ा संगठन है इसमें अगर हरेक सोचे जो मैं चाहता हूँ वही करूँ, यह तो नहीं हो सकता है ना। अटेन्शन तो रखना पड़ता है ना। भले चलने में, रहने में हिम्मत रखी है तभी तो रहते हैं। हिम्मत है लेकिन हिम्मत के साथ जो बाबा की मदद मिलती है ना, वो उनको प्राप्त कम होती है। जब चाहना भी है और पुरुषार्थ का लक्ष्य भी रखा है, तभी तो यहां रहते हैं ना! नहीं तो चले जायें ना लौकिक घर में, कोई रोकता थोड़े ही है। परन्तु दिल में यह भी नहीं मैं जाऊँ, और रहने में भारी भी हैं लेकिन दूसरों को खुश करना भी सीखें। सिर्फ अपने को खुश नहीं रखें।